Unit - 3

* किशोरावस्था :- (Adolescence)

Introduction :- चूँकि मानव विकास की विभिन्न अवस्थाएँ होती है जिसमें मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को अधिक महत्वपूर्ण बताया है इस अवस्था में बालकों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलता है जैसे शारीरिक, मानसिक बौद्धिक, संवेगिक इत्यादि परिवर्तन।

इस प्रकार हम कह सकते है कि इस अवस्था में बालक परिपक्वता की ओर बढ़ने लगता है। तथा उनमें संज्ञानात्मक विकास स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगता है साथ ही कल्पनात्मक विचारों को आत्मसात कर एक व्यक्ति की भांति व्यवहार करने का प्रयास करता है ~~जिससे~~ जो उसे जीवन के लक्ष्यों की ओर उन्मुख करता है। ~~जो~~ ~~उसका~~ वह सामाजिक व्यवहारों को अपनाते हुए जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

* किशोरावस्था का अर्थ :- (Meaning of Adolescence)

किशोरावस्था को अंग्रेजी में Adolescence (एडोलेसेंस) कहते है जो लैटिन भाषा के Adolescere से बना है जिसका अर्थ होता है - परिपक्वता की ओर बढ़ना (To grow or to grow, to maturity) अर्थात- किशोरावस्था जीवन का वह समय है जहाँ से एक अपरिपक्व व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक विकास परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है। यह अवस्था सामान्यतः 13 वर्ष से 20 तक या 19 तक चलती है।

अतः किशोरावस्था, बाल्यावस्था एवं प्रौढ़ावस्था के बीच की अवस्था है जिसमें वह न तो बच्चा रहता है और न ही व्यक्ति / बल्कि वह विकास की उस

अवस्था में रहता है जहाँ उसके शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगता है। वह अपनी सामाजिक पहचान बनाने के साथ-साथ दिवा स्वप्नों में खोने लगता है।

अतः इस अवस्था में किशोर या किशोरियों में अलग-अलग समस्याएं उत्पन्न होने लगती है साथ ही वह अपने को तनाव और समस्याओं से घिरा हुआ महसूस करता है इस कारण स्टेनले हॉल ने किशोरावस्था को आँधी-तूफान या तनाव की अवस्था कहा है।

* किशोरावस्था की परिभाषा :- "जरसील्ड के अनुसार"

"किशोरावस्था वह समय है जिसमें विचारशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ता है।"

स्टेनले हॉल के शब्दों में :- "किशोरावस्था बड़े
According to stenley hall

संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।"

* किलपैट्रिक के अनुसार :- "किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"

* किशोरावस्था की विशेषताएं :-

(1) यह तुलनात्मक रूप से एक महत्वपूर्ण अवस्था होती है।

(2) यह बाल्यावस्था एवं व्यवस्कावस्था के बीच की अवस्था है अर्थात परिवर्ती अवस्था है।

(3) इस अवस्था में किशोरों की भौतिक स्थिति अस्पष्ट होती है और वह कौन है, समाज में उसकी क्या भूमिका होती है।

(4) यह एक समस्यात्मक अवस्था है।

(5) इसमें किशोर तथा किशोरियों में अपने समूहों में एक अलग पहचान बनाने की प्रवृति पाई जाती है।

(6) इसमें किशोर-किशोरियाँ दिवा स्वप्नों में खोये रहते हैं।

(7) यह बाल्यावस्था की कहलाने होती है।

(8) इसमें संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है।

★ **किशोरावस्था की आवश्यकताएँ एवं आकांक्षाएँ :-**

(1) → शारीरिक विकास -
→ पौष्टिक भोजन
→ शारीरिक सुन्दरता या स्वच्छता
→ शारीरिक, मानसिक गतिविधियाँ
→ खेल कूद में भाग लेने की प्रवृति
→ आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता
→ किसी कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करने की प्रवृति (इगो डाय)
→ विषमलिंगी के प्रति आकर्षण
→ सामाजिक प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान
→ यौन शिक्षा की आवश्यकता
→ किसी को आदर्श मानना
→ भ्रमण की आकांक्षा
→ सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकता

अतः उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर यह कह सकते हैं कि इस अवस्था में किशोर या किशोरियों में तीव्र गति से शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक और सामाजिक परिवर्तन होते हैं जिनका प्रभाव उनकी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं पर पड़ता है।

* किशोरावस्था की समस्यायें :-

(1) विद्यालय में समायोजन की समस्या।

(2) पारिवारिक समायोजन की समस्या

(3) विपरीत लिंग के प्रति समायोजन की समस्या

(4) विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण का बढ़ना

(5) संवेगात्मक समायोजन संबंधित समस्या

(6) आत्म-अभिमान या जागरूक की प्रबलता

(7) समाज में समायोजन की समस्या।

(8) चिंता एवं चिंतन की समस्या

* किशोरावस्था में शिक्षा का स्वरूप :-

- → लोकतांत्रिक वातावरण
- → मानसिक विकास हेतु शिक्षा
- → व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुरूप शिक्षा
- → जीवन-दर्शन की शिक्षा
- → शारीरिक शिक्षा

(6) सहगामी क्रियाएँ
→ उपयुक्त पाठ्यक्रम
→ नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा
→ अध्यापकों तथा अभिभावकों का अपेक्षा
→ यौन शिक्षा
→ निर्देशन एवं परामर्श केंद्र
→ अपराध प्रवृति का निवारण

इस प्रकार किशोरों की शिक्षा का स्वरूप उपरोक्त बातों पर आधारित है तथा व्यवस्थित एवं सरल शिक्षा प्रदान कर उनकी समस्याओं को कम किया जा सकता है।

* किशोरावस्था में शिक्षा प्रदान करने हेतु अध्यापक एवं विद्यालय की भूमिका :-

(1) किशोरावस्था में शिक्षा देने हेतु शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए।

(2) विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों के माध्यम से उन्हें मार्गदर्शन केंद्रों की स्थापना करनी चाहिए।

(3) किशोरावस्था में बालकों को व्यवसायिक निर्देशन प्रदान कर शिक्षकों को उन्हें व्यवसाय हेतु तैयार करनी चाहिए।

(4) किशोर-किशोरियों को उनके शारीरिक विभिन्नता के आधार पर अध्यापकों को उन्हें अलग-2 कार्य सौंपे जाने चाहिए।

(5)

(6) शिक्षकों को किशोरों में अनुशासन की भावना उत्पन्न करनी चाहिए ताकि भविष्य में वो अच्छे एवं आदर्श नागरिक बन सकें।

(7) अध्यापकों को बच्चों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करनी चाहिए।

(8) किशोरों में अपराध, चोरी एवं अनुशासनहीनता न पनपे इसके लिए शिक्षकों को उन्हें नैतिक शिक्षा भी प्रदान करनी चाहिए।

इसप्रकार एक शिक्षक अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए किशोरों को नैतिकता का पाठ पढ़ाते हुए उन्हें आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा प्रदान कर सकता है।

* किशोरावस्था में अनुभवी शिक्षकों द्वारा निर्देशन एवं परामर्श :-

(1) एक शिक्षक ही बच्चों का सही मार्गदर्शक है और परामर्शदाता भी है अतः शिक्षकों को बालकों के अवांछित व्यवहारों को दूर कर उनमें स्नेह, त्याग एवं दूसरों के प्रति संवेदनशीलता की भावना जागृत करनी चाहिए।

(3) किशोरावस्था में शारीरिक ऊर्जा में तेजी से वृद्धि होती है अतः किशोर-किशोरियों को शारीरिक व्यायाम तथा परिश्रम वाले खेलों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

(4) विद्यालय में स्वास्थ्य-शिक्षा का कार्यक्रम निर्देशन या परामर्श केन्द्र के अंतर्गत संचालित होनी चाहिए।

(5) किशोरावस्था में व्यक्तिगत, शैक्षिक और व्यवसायिक निर्देशन प्रदान कर उनके उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करना चाहिए।

(6) किशोरावस्था अच्छे निर्देशक एवं परामर्शदाता द्वारा उनमें सृजनात्मकता का विकास करना चाहिए।

(7) किशोरावस्था में किशोर-किशोरियों का विपरीत लिंग के प्रति ज्यादा झुकाव होता है अतः उन्हें अच्छा मार्गदर्शन प्रदान कर उन्हें सही-गलत का ज्ञान प्रदान करना चाहिए।

* **किशोरावस्था में किशोर-किशोरियों की सामाजिक समस्याएँ :-**

(1) इस अवस्था में किशोरों को उनके माता-पिता से मतभेद उत्पन्न हो जाता है।

(2) किशोर अपने व्यवसाय तथा भविष्य के प्रति चिंतित रहते हैं।

(3) बालकों तथा बालिकाओं में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण की भावना उत्पन्न होती है।

(4) सामाजिक कार्यों में भाग लेने की प्रवृत्ति

(5) समाज में बुरी आदतों का विकास एवं गलत संगति की समस्या अक्सर देखने को मिलती है।

(6) सामाजिक रीति रिवाजों एवं परम्पराओं को न मानना। इत्यादि समस्याएँ उनके ~~समक्ष~~ समक्ष उत्पन्न होती है।

किशोरावस्था में माता-पिता, अध्यापक एवं विद्यालय की भूमिका :-

- किशोर मनोविज्ञान का समुचित ज्ञान
- किशोर - किशोरियों के वृद्धि एवं विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना।
- उचित यौन शिक्षा प्रदान करना।
- किशोर - किशोरियों के साथ उचित व्यवहार
- संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करना
- किशोर एवं किशोरियों की विभिन्न रुचियों की पूर्ति करना।
- धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा प्रदान करना।
- व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना
- मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाओं की व्यवस्था

इत्यादि उपरोक्त बिन्दुओं के आधार किशोरावस्था में बच्चों के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास एवं उनकी आवश्यकताओं एवं समस्याओं से परिचित होकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए ताकि वो अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। अतः किशोर - किशोरियों को अच्छी तरह समझकर अभिभावक एवं शिक्षकों को उनका विश्वास प्राप्त कर उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।

होना चाहिए।

(challenges) (conflicts)

किशोरावस्था के प्रमुख चुनौतियाँ एवं मुद्दे -:

- → पारिवारिक नियंत्रण
- → समाजीकरण में बाधा
- → स्वतंत्रता में कमी
- → शिक्षा का अभाव
- → साथियों का प्रभाव
- → यौन शिक्षा का अभाव
- → बुरी आदतों का विकास
- → व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक समस्यायें
- → संवेगों में वृद्धि
- → संकोची दृष्टिकोण

* किशोरावस्था समस्याओं का काल है, कैसे ?

कुछ अध्ययनों के आधार पर किशोरावस्था को समस्याओं का काल कहा गया है।(Age of Problems) किशोरों कि सामान्यतः समस्याये परिवार, विद्यालय, मनोरंजन भविष्य, व्यवसाय, विपरीत लिंग इत्यादि से जुड़ा होता है। ये समस्यायें आर्थिक, व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर की होती है। चूँकि इस अवस्था को 'समस्या की आयु' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस अवस्था के बालक - बालिकाएं अपने माता - पिता, संरक्षकों तथा अध्यापकों के लिए एक समस्या होता है, वह अपने विकास की इस अवस्था के साथ पूरी तरह समायोजित नहीं हो पाता है।

अतः किशोर - किशोरियों में चिंता, तनाव, उत्सुकता, अनिश्चितता और भ्रांति के लक्षण

उत्पन्न होते हैं, जो किसी न किसी रूप में उनके सामने समस्याएं उत्पन्न करते हैं। किशोरावस्था में बालकों को अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि बाल्यावस्था में उनकी समस्याओं का समाधान उनके माता पिता, शिक्षक या बड़े लोग कर देते हैं। इस प्रकार इस अवस्था में वो अपने से बड़ो को बुद्धू समझने लगते हैं तथा उनमें यह भावना आ जाती है कि वह स्वयं किसी कार्य को कर सकते हैं, बालकों की कुछ ऐसी भी समस्याएं होती हैं जो वो बड़े से कहने में संकोच महसूस करते हैं जैसे विपरित लिंग के प्रति आकर्षण का भाव या यौन संबंधी समस्याएं। इनके साथ ही कुछ अन्य समस्याएं भी हैं जो इस प्रकार हैं —

→ क्रांतिकारी शारीरिक परिवर्तन
→ समायोजन की समस्या
→ कल्पनात्मक सोच
→ दिवा स्वप्न
→ विपरित लिंग के प्रति आकर्षण
→ आत्मनिर्भर बनने की चाह
→ समूह - साथियों को महत्व देना
→ पद एवं आय की चाह
→ समाज सेवा की भावना

इत्यादि। अतः इन्हीं समस्याओं और कठिनाइयों को देखते हुए मनोवैज्ञानिकों ने इस अवस्था को तनाव, तूफान एवं विरोध की अवस्था माना है।

—— 0 ——